

371वाँ

सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण

हिन्दी मासिक

वर्ष 31

एकादश अंक

जून

2009

इस अंक में

- | | |
|---|---|
| 1889 सम्पादकीय | 1983 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) सम्मिलित रक्षा सेवा परीक्षा, 2009 |
| 1891 पाठकों के पत्र | 1990 (ii) केनरा बैंक पी.ओ. परीक्षा, 2009 |
| 1894 राष्ट्रीय घटनाक्रम | 1994 (iii) झारखण्ड लोक सेवा आयोग सिविल जज जूनियर डिवीजन (मुन्सिफ) प्रा. परीक्षा, 2008 |
| 1901 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम | 2001 (iv) यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक (पी.ओ.) परीक्षा, 2009 |
| 1908 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य | 2005 भारतीय अर्थव्यवस्था—आगामी सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा के लिए विशेष |
| 1918 नवीनतम सामान्य ज्ञान | 2009 आगामी बी.बी.एस-सी. एण्ड ए.एच. परीक्षा (PVT) हेतु विशेष हल प्रश्न |
| 1924 खेलकूद | 2012 उद्योग व्यापार जगत् |
| 1928 राज्य समाचार | 2014 ऐच्छिक विषय—समाजशास्त्र : (i) सिविल सर्विसेज (प्रा.) परीक्षा, 2008 |
| 1929 रोजगार समाचार | 2025 (ii) उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा (विशेष), 2008 |
| 1932 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी | 2032 आर.ए.एस./आर.टी.एस. (प्रा.) परीक्षा, 2008 |
| 1935 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं | 2037 विविध तथ्य एवं सामान्य जानकारी—(i) सूचना एवं प्रसारण क्षेत्र में नई पहलें और गतिविधियाँ : एक झलक |
| 1943 स्मरणीय तथ्य | 2040 (ii) अंकगणित—एस.एस.सी. सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2008 |
| 1945 विश्व परिदृश्य | 2044 तर्कशक्ति परीक्षा—पंजाब नेशनल बैंक मैनेजमेन्ट ट्रेनीज परीक्षा, 2009 |
| 1947 आर्थिक लेख—(i) वित्तीय समावेशन में सहकारी संस्थाओं की भूमिका | 2049 क्या आप जानते हैं ? |
| 1949 (ii) वैश्विक आर्थिक मंदी और संरक्षणवाद | 2050 अपना ज्ञान बढ़ाए |
| 1951 अन्तर्राष्ट्रीय लेख—भारत-चीन में वैश्विक विस्तार की कवायद | 2052 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—क्या वर्तमान भूमण्डलीय आर्थिक संकट का समाधान समाजवाद है ? |
| 1954 समसामयिक लेख—(i) भारत के चुनाव में धनशक्ति का वर्चस्व और चुनाव सुधार की दिशा | 2055 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—मूल्यों रहित मनुष्य जानवर से बेहतर नहीं है |
| 1958 (ii) हिंसा की आग में जलता पश्चिम एशिया | 2058 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-361 का परिणाम |
| 1962 प्रशासनिक लेख—नौकरशाही की अवधारणा | |
| 1967 संवैधानिक लेख—भारतीय संघात्मक व्यवस्था | |
| 1971 मानवाधिकार लेख—भारतीय प्रजातंत्र एवं मानव अधिकार | |
| 1974 विधिक लेख—भारत में लैंगिक समानता के प्रति न्यायिक दृष्टिकोण | |
| 1975 सूचना प्रौद्योगिकी लेख—ग्रामीण जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका | |
| 1977 विशेष लेख—हिन्दी की सर्वप्रथम कहानी | |
| 1979 सार संग्रह | |

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

कार्य करने में उचित-अनुचित का ध्यान रखिए

किसी भी कार्य को करने में दो विचारधाराएं काम करती हैं—एक का सम्बन्ध है जर्मनी के तानाशाह हिटलर से, जो यह कहा करता था—इस पृथ्वी पर सही और गलत की एकमात्र निर्णायक है सफलता. तात्पर्य स्पष्ट है—सफलता प्राप्त होनी चाहिए, साधन कोई भी और कैसे भी हों ? दूसरी विचारधारा का सम्बन्ध है महात्मा गांधी से, जिनका कहना था कि पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पवित्र साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए. विश्व इन दोनों महान् व्यक्तियों में किसका सम्मान करता है, इस प्रश्न का उत्तर ही यह स्थापना कर देता है कि जो सही या उचित है वह मान्य भी है और शाश्वत भी.

सुकरात ने भौतिक सुख की प्राप्ति के प्रति न कभी ध्यान दिया और न उसके लिए कभी प्रयत्न किया. उसकी निम्नस्तरीय जीवन-पद्धति को देखकर सोफिस्ट एण्टीफोन (Sophist Antiphon) ने एक बार कहा था कि यदि किसी दास को इस प्रकार जीवन व्यतीत करने को विवश किया जाए, तो वह भी भाग जाएगा. इसी प्रकार सुकरात ने जब शहादत दी अर्थात् अपने जीवन का बलिदान किया, तब भी उनकी दृष्टि वही थी—उसने जीवन से पलायन करने के लिए मृत्यु का वरण नहीं किया था, बल्कि गलत काम करने की अपेक्षा उसने मृत्यु का आलिङ्गन करना अधिक उचित समझा था.

क्या सही है, क्या गलत है, इस सम्बन्ध में विवाद हो सकता है, विशेषकर आधुनिक वैज्ञानिक युग में. कुछ कार्यों का औचित्यानौचित्य देश, काल एवं व्यक्ति की मान्यताओं पर निर्भर होता है, परन्तु कुछ बातें एवं मान्यताएं शाश्वत होती हैं. सुकरात की प्रतिबद्धता उन्हीं के प्रति थी. इसी को लक्ष्य करके अब्राहम लिंकन ने कहा है कि हमको विश्वास होना चाहिए कि औचित्य वास्तविक शक्ति का हेतु बनता है. इसी विश्वास के सहारे हमें अन्त तक अपना कर्तव्य पालन करते रहना चाहिए.

स्वामी विवेकानन्द ने जीवन को व्यापक परिवेश में देखा था. वह जीवन और जगत् में प्राप्त होने वाली विविधताओं में सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे. वह कहते थे कि विज्ञान और अध्यात्म के मध्य संगति स्थापित करो. विभिन्न सिद्धान्तों, मतवादों, पथों, मजहबों, गिरिजाघरों, मठों, मन्दिरों आदि की बातों की चिन्ता मत करो, क्योंकि प्रत्येक मानव में निहित सारतत्त्व की तुलना में बाह्याचार सम्बन्धी बातों का महत्व बहुत कम है. मानव में सारतत्त्व अथवा अध्यात्म का तत्त्व जितना ही विकसित किया जाएगा. मानव उतना ही अधिक शक्तिशाली बनेगा. सच्चा मानव वही है जो आन्तरिक रूप से